 बी. ए. खण्ड-(प्रथम) / अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 05.04.2021

पत्र : द्वितीय / प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

विद्यापति को संधिकाल का कवि कहा जाता है। क्यों?

विद्यापति का ~~के काव्य में~~ कालखण्ड भक्ति काल के अवसान और रीतिकाल के आरंभ का युग था। इसलिए दोनो युगों के विचारों का प्रभाव उनके उपर था। जिस कारण उन्हें संधिकाल का कवि कहा जाता है। उनके पदों में श्रृंगार पक्ष की प्रधानता है। जिस कारण हम कह सकते है कि उनके उपर भक्तिकाल से अधिक रीतिकाल का प्रभाव था। कुछ समीक्षक तो उनके काव्य में श्रृंगार की प्रधानता देख कर उनके काव्य को विलास की वस्तु तक कहते है। उसे वह उपासना का साधना नहीं मानते हैं। वयः संधि, नख-शिख, अभिसार, सूरत, दूती वचन आदि के प्रसंगों में बड़े सजीव और मार्मिक चित्रण किए है। लेकिन इस क्रम में उनसे भक्ति कहीं नहीं छुटी है। उनके इस वर्णन का आश्रय राधाकृष्ण का प्रेम है। इस प्रकार वे भक्तिकाल और रीतिकाल के बीच के कवि हैं। सिर्फ कालखण्ड ही नहीं उनके संपूर्ण विचार धारा पर दोनों ही काल का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव था।

हिन्दी के वास्तविक साहित्य का प्रारंभ भक्त कवियों की रचनाओं से ही होता है। उत्तर भारत में भक्ति-भावना को प्रवाहित करने का श्रेय स्वामी रामानन्द को तथा महाप्रभु वल्लभाचार्य को है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्णयुग के नाम से पुकारा जाता है। भक्तिकाल का विश्लेषण करने के पश्चात मालूम होता है कि विद्यापति कृष्णभक्ति धारा के प्रथम कवि माने जा सकते है। परन्तु उनके काव्य को दूसरे ढंग से अगर हम देखते है तो कृष्ण भक्ति

अर्थात् आध्यात्म का वे शृंगार की चाशनी में डुबो कर पाठकों के बीच परोसते हैं। जिससे यह प्रतीत होता है कि दोनों ही काल का अनुपम गहरा प्रभाव है। विद्वान उन्हें मुख्य रूप से शृंगारी कवि मानते हैं। जबकि देखा जाए तो दोनों ही काल पर उनका समान रूप से पकड़ है। न उनका आध्यात्म कमजोर है न ही शृंगार दोनों के ही वे बेजोड़ कवि हैं। आध्यात्म और शृंगार दोनों पर ही उनका विशेष पकड़ है। फिर भी विद्वानों को वे रीतिकाल के अधिक निकट दिखते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं — "विद्यापति के अधिकतर पद शृंगार के ही हैं, जिनमें नायिका और नायक राधाकृष्ण हैं। इन पदों की रचना जयदेव के गीत-काव्य 'गीतगोविन्द' के अनुकरण पर ही शायद की गयी हो। उनका माधुर्य अद्भुत है। विद्यापति शैव थे। उन्होंने इन पदों की रचना शृंगार काव्य की दृष्टि से की है, भक्त के रूप में नहीं।"

जितनी भी कविता उन्होंने राधाकृष्ण को लेकर रची है, प्रायः सभी शृंगारिक हैं। वैसे विद्यापति भक्त-कवि और शृंगारी कवि दोनों हैं। परन्तु उनकी रचना भक्तिकाल के अपेक्षा रीतिकाल के अधिक निकट दिखती है। बेनीपुरी जी ने लिखा — "विद्यापति को शृंगार की संपूर्ण प्रक्रिया का निर्वाह करना पड़ा है, साथ ही वे काम-शास्त्रादि के प्रभाव से भी अछूते नहीं रह पाये। डॉ० राम कुमार वर्मा ने स्पष्ट करके उन्हें शृंगारी कवि कहा है। उन्होंने लिखा है कि राधा का प्रेम भौतिक और

और वासनामय प्रेम है। आनंद ही उसका उद्देश्य है और सौन्दर्य ही उसका कार्यकलाप। विद्यापति के इस बाह्य संसार में भगवत् - भजन कहाँ, इस वय: संधि में ईश्वर से संधि कहाँ, सद्य: स्नाता में ईश्वर से नाता कहाँ और अभिसार में भक्ति का सार कहा ? उनकी कविता विलास की सामग्री है उपासना की साधना नहीं। उससे हृदय मतवाला हो सकता है, शांत नहीं। इसलिए निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि "विद्यापति काव्य की दृष्टि से भक्तिकाल के बजाय रीतिकाल के निकट हैं।" वैसे कवि किसी काल या विचारधारा या अन्य किसी बंधन में नहीं बंधा होता है वह स्वच्छंद होता है, नदी की धार की तरह।